द ग्लोबल टाइम्स
सोमवार, सितम्बर 7, 2026

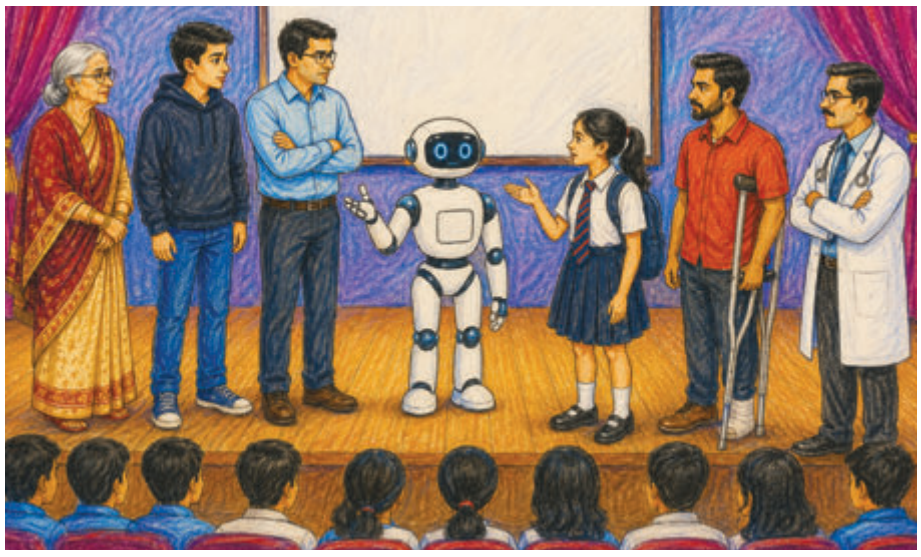

समय 2.0

मंदाकिनी शुक्ला, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, जगदीशपुर कक्षा 10सी

पात्र: सूत्रधार; विवान – टेक्नोलॉजी और एआई का दीवाना लड़का; पिता– व्यस्त और थके हुए; दादी– भावुक और अकेली; रिया – स्कूल की लड़की; एआई असिस्टेंट– (आवाज या रोबोट); डॉक्टर, डिलीवरी बॉय

दृश्य 1

(मंच पर एक परिवार है। सभी साथ बैठे हैं लेकिन कोई किसी से बात नहीं कर रहा। पिता लैपटॉप पर, विवान मोबाइल पर, दादी अकेली खिड़की से बाहर देख रही हैं।)

सूत्रधार: यह वो समय है जहाँ घर बड़े हो गए हैं लेकिन रिश्तों के बीच की दूरी उससे भी बड़ी।

विवान: (मोबाइल में तेजी से बोलते हुए) एआई! मेरा पूरा होमवर्क, प्रोजेक्ट और स्पीच तैयार करो।

एआई: कार्य पूर्ण हुआ।

विवान: वाह! अब तो दिमाग लगाने की भी जरूरत नहीं।

पिता: (लैपटॉप से नजर हटाए बिना) बेटा! खाना खा लो।

विवान: ऑर्डर कर दिया। 30 मिनट डिलीवरी।

दादी: (धीरे से) पहले घरों में खाना नही, प्यार डिलीवर होता था। (कोई ध्यान नहीं देता।)

दादी: विवान जरा मेरे पास बैठ जा। आज पुरानी तस्वीरें देख रही थी।

विवान: दादी प्लीज! अभी टाइम नहीं है।

एआई: आपका स्क्रीन टाइम आज 11 घंटे हो चुका है।

विवान: (हँसकर) बस? आज तो रिकॉर्ड टूटेगा। (दादी उदास होकर तस्वीर सीने से लगाती हैं।)

दृश्य 2

(सड़क का दृश्य। एक डिलीवरी बॉय तेज बारिश में फिसलकर गिर जाता है। उसका खाना सड़क पर बिखर जाता है।)

डिलीवरी बॉय: आ... मेरा पैर! (भीड़ इकट्ठा होती है। लोग मदद करने के बजाय वीडियो बनाने लगते हैं।)

पहला लड़का: भाई कंटेंट मिल गया!

डिलीवरी बॉय: एक्सीडेंट – वायरल जाएगा।

दूसरी लड़की: रुको–रुको! पहले रील बनाती हूँ। (डिलीवरी बॉय दर्द में पड़ा है।)

विवान: (मोबाइल निकालकर) एआई! फ्रैक्चर होने पर क्या करना चाहिए?

एआई: रोगी को तुरंत सहायता दें। एम्बुलेंस बुलाएँ।

डिलीवरी बॉय: (दर्द से) भैया! फोन बाद में। पहले उठाओ। (सभी चुप। तभी स्कूल यूनिफॉर्म में रिया आगे आती है।)

रिया (बैग नीचे रखकर): भैया, मेरा हाथ पकड़िए। (वह अपना रेनकोट उतारकर डिलीवरी बॉय पर डाल देती है।)

सूत्रधार: जहाँ हजारों कैमरे चालू थे, वहाँ इंसानियत ऑफलाइन थी। और जहाँ एक छोटा दिल जागा, वहीं मानवता जिंदा हो गई।

दृश्य 3:

(अस्पताल। डॉक्टर बाहर आते हैं।)

डॉक्टर: अगर पाँच मिनट पहले मदद मिल जाती तो इतना खून नहीं बहता।

विवान: लेकिन डॉक्टर, हम लोग जानकारी खोज रहे थे।

डॉक्टर: आजकल लोग कैसे बचाएँ? सर्च करते हैं, पर बचाने के लिए हाथ आगे नहीं बढ़ाते। ज्ञान मोबाइल में मिल जाता है लेकिन इंसानियत दिल में होनी चाहिए। (विवान शर्मिंदा होकर मोबाइल नीचे करता है।)

दृश्य 4:

(घर में अंधेरा है। दादी अकेली बैठी हैं। सामने पुराना रेडियो।)

विवान: दादी! अभी तक आपने खाना क्यों नहीं खाया?

दादी: भूख तो तब लगती है बेटा जब साथ में कोई अपना हो। (कुछ पल मौन रहता है।) तुम्हें पता है, आज पूरा दिन मैंने किसी से बात नहीं की।

विवान: लेकिन मैं तो घर में था।

दादी: शरीर घर में था, पर मन स्क्रीन में। (विवान की आँखें झुक जाती हैं।)

दादी: मशीनें जवाब दे सकती हैं लेकिन अपनापन नहीं। (विवान धीरे–धीरे मोबाइल बंद करता है और दादी का हाथ पकड़ लेता है।)

विवान: दादी! आज पहली बार लग रहा है, मैं स्मार्ट तो बन गया, पर इंसान बनना भूल गया।

दृश्य 5

(सभी पात्र मंच पर। हल्की रोशनी। एआई बीच में खड़ा है।)

एआई: मैं इंसान की बनाई तकनीक हूँ। मैं तेज हूँ, पर किसी का दर्द महसूस नहीं कर सकता।

रिया: अगर किसी की तकलीफ देखकर भी दिल न पिघले तो फिर इंसान और मशीन में फर्क क्या रह जाएगा?

पिता: हमने मशीनों को इंसानों जैसा बनाना शुरू किया और खुद मशीनों जैसे होते गए।

सूत्रधार: तकनीक गलत नहीं है, गलत वो पल है, जब इंसान सामने रो रहा हो और हम स्क्रीन पर व्यस्त हों।

संदेश: एआई दिमाग को तेज बना सकता है लेकिन इंसानियत ही दिल को ज़िंदा रखती है। डर इस बात का नहीं कि मशीनें इंसान बन जाएँगी, डर इस बात का है कि कहीं इंसान मशीन न बन जाए। जी टी

नंबरों का बोझ

आराध्या पाठक, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, मयूर विहार, कक्षा 9 ए

पात्र: आरोही– एक संवेदनशील छात्रा; माँ– समाज की तुलना में उलझी हुई; पिता– प्रतिष्ठा और अंकों को सफलता मानने वाले; शिक्षिका– परिणाम को ही प्रतिभा समझने वाली; माही– सच्ची मित्र

दृश्य1: रिजल्ट का दिन

(मंच पर हल्का तनावपूर्ण संगीत। दरवाजा खुलता है। आरोही धीरे–धीरे घर में प्रवेश करती है। हाथ में रिपोर्ट कार्ड है। माँ मोबाइल पर पड़ोसन से बात कर रही हैं।)

माँ: हाँ–हाँ बहन जी आज रिजल्ट आया है। देखते हैं हमारी बेटी मोहल्ले का नाम रोशन करती है या नहीं। (मोबाइल का कवर बंद कर आरोही की तरफ देखती है) आ गई? चलो जल्दी बताओ, कितने प्रतिशत आए? (आरोही चुप रहती है।)

माँ: चुप क्यों हो? तो बहुत अच्छे आए हैं या बहुत बुरे। (आरोही काँपते हाथों से रिपोर्ट कार्ड देती है। माँ रिजल्ट देखते हुए आश्चर्य से कहती है) 82%?? बस इतने? (तभी पिता अखबार मोड़ते हुए आते हैं।)

पिता: अरे! शर्मा जी की बेटी के 96 प्रतिशत आए हैं। पूरा मोहल्ला मिठाई खा रहा है। और यहाँ सन्नाटा है।

आरोही: मैंने बहुत मेहनत की थी।

पिता: बेटा, आजकल मेहनत नहीं मार्कशीट देखी जाती है।

माँ: इतनी फीस, इतने ट्यूशन। और बदले में सिर्फ 82?

सूत्रधार: यही सिर्फ शब्द ही बच्चे का आत्मविश्वास खा जाता है। (आरोही चुपचाप कमरे में चली जाती है।)

दृश्य 2: विद्यालय

(स्कूल के कॉरीडोर में छात्राएँ आपस में बातें कर रही हैं।)

पहली छात्रा: मेरे 94 प्रतिशत आए! मैं ने कहा – जो माँगोगी, दिलाएँगे।

दूसरी छात्रा: मेरे 91 प्रतिशत आए। फिर भी पापा बोले – 5 नंबर कहाँ गए? (सब हल्का हँसते हैं।)

पहली छात्रा: 90 प्रतिशत से कम वालों को लोग ऐसे देखते हैं जैसे उन्होंने देशद्रोह किया हो। (हल्की हँसी। आरोही उदास बैठी है। माही उसके पास आती है।)

माही: क्या हुआ?

आरोही: कुछ नहीं।

माही: तेरा चेहरा बता रहा है कि कुछ नहीं में ही बहुत कुछ छिपा है।

आरोही: घर में ऐसे देख रहे हैं जैसे मैं हार गई हूँ।

माही: 82% हार नहीं होती।

आरोही: हमारे घर में होती है।

दृश्य 3: कक्षा

शिक्षिका: जो विद्यार्थी मेहनत करते हैं, वही जीवन में आगे बढ़ते हैं। कुछ बच्चे समय बर्बाद करते हैं, फिर परिणाम देखकर दुखी होते हैं।

(छात्र आरोही की ओर देखने लगते हैं। आरोही सिर झुका लेती है।)

शिक्षिका: आरोही, खड़ी हो जाओ। (आरोही खड़ी होती है।) मुझे तुमसे इससे बेहतर की उम्मीद थी। (आरोही चुप रहती है।)

सूत्रधार: कभी–कभी शब्द थप्पड़ से भी ज्यादा चोट पहुँचा देते हैं।

दृश्य 4: रात

(कमरे में किताबें फैली हुई हैं। घड़ी में रात के 2 बजे हैं। आरोही पढ़ रही है। आँखें लाल हैं।)

माँ: अभी तक जाग रही हो?

आरोही: नींद नहीं आ रही।

माँ: फोन दो अपना।

आरोही: मम्मी मैंने कुछ नहीं किया।

माँ: तुम बच्चों का ध्यान बस फोन में रहता है। (पिता अंदर आते हैं।)

पिता: अगली बार 90 प्रतिशत से कम नहीं आने चाहिए।

आरोही: अगर नहीं आए तो? (कुछ पल की चुप्पी) तो सोच लेना। (माँ–पिता चले जाते हैं।)

(आरोही अकेली बैठी है। धीरे से किताब बंद करती है।)

सूत्रधार: जब बच्चा खुद को अंकों में तौलने लगे तो समझ लीजिए समाज हार रहा है।

दृश्य 5: जन्मदिन

(हल्का संगीत। मेज पर छोटा–सा केक रखा है।)

माँ: जल्दी केक काटो मुझे रसोई भी संभालनी है। (आरोही मोमबत्तियाँ देखती है।)

पिता: वैसे गणित में इतने कम अंक क्यों आए? (आरोही की मुस्कान धीरे–धीरे गायब हो जाती है।)

माही: अंकल आज इसका जन्मदिन है।

पिता: तो क्या हुआ? भविष्य भी कोई चीज होती है।

माही: लेकिन अंकल बचपन भी कोई चीज होती है। (हल्की चुप्पी। आरोही मोमबत्तियाँ बुझाती है। सब ताली बजाते हैं। उसकी आँखें नम हैं।

दृश्य 6: टूटन

सूत्रधार: धीरे–धीरे आरोही पढ़ाई नहीं, डर पढ़ने लगी। उसे किताबों में शब्द नही, घर वालों की उम्मीदें दिखाई देने लगीं। (फोन पर संदेश आता है। माही का संदेश है: नीचे आ जा, थोड़ी देर बातें करेंगे। (आरोही जवाब लिखती है फिर मिटा देती है। वह आईने में खुद को देखती है।)

सूत्रधार: यह वही उम्र होती है जहाँ बच्चे भविष्य नहीं बस थोड़ा–सा अपनापन ढूँढ़ रहे होते हैं।

दृश्य 7 : अंतिम दृश्य

(मंच पर गंभीर वातावरण। माँ–पिता बैठे हैं। शिक्षिका भी मौजूद हैं।)

शिक्षिका: आरोही पहले बहुत खुश रहती थी, अब किसी से बात तक नहीं करती।

माँ: हमें लगा था थोड़ा दबाव देंगे, तो और अच्छा करेगी।

पिता: हम तो बस इसका भविष्य अच्छा चाहते थे। (आरोही धीरे–धीरे मंच पर आती है। बेटा!

आरोही: पापा एक बात पूछूँ?

पिता: हाँ।

आरोही: अगर मेरे 95 प्रतिशत आते, तो क्या आप मुझे ज्यादा प्यार करते? जब भी अंक कम आते हैं ऐसा लगता है जैसे मैं भी कम हो जाती हूँ। (माँ की आँखें नम हो जाती हैं।) अगर अंक ही सब कुछ हैं तो मैं कहाँ हूँ?

सूत्रधार: समाज में बच्चों की तुलना मोबाइल के नेटवर्क से भी तेज होती है। शर्मा जी का बेटा, गुप्ता जी की बेटी, उसके इतने नंबर। इन शब्दों ने न जाने कितने बच्चों की मुस्कान छीन ली। हर बच्चा टॉपर नहीं बन सकता लेकिन हर बच्चा एक अच्छा इंसान जरूर बन सकता है। अंक जीवन का एक हिस्सा है, पूरा जीवन नहीं।

पर्दा गिरता है। जी टी